1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 43, अंक 45 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 5 अक्तूबर, 2020 से रविवार 11 अक्तूबर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

हाथरस काण्ड :

बलात्कार लड़की का या दलित लड़की का?

बलात्कार के नाम पर समाज को बांटने की कोशिश

हाथरस की रेप पीडिता एक लड़की 15 दिनों तक जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ती रही और आखिरकार उसने दम तोड़ दिया और पुलिस ने रातों-रात अंतिम संस्कार भी कर दिया। इस मामले को लेकर विपक्षी दल और दलित नेताओं ने सोशल मीडिया से लेकर सड़क तक मोर्चा खोल रखा दिया। कांग्रेस के दलित नेता पीएल पुनिया और उदित राज ने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ सड़कों पर उतरकर पीड़िता के लिए न्याय की मांग करते हुए विजय चौक पर प्रदर्शन भी किया। हाथरस की निर्भया की मौत पर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी से लेकर प्रियंका गांधी तक ने

मोर्चा खोल रखा है। राहुल ने सीधे तौर पर योगी सरकार को दलित जाति के नाम पर घेरा कहा, उत्तर प्रदेश के वर्ग विशेष के जंगलराज ने एक और युवती को मार डाला।

इधर-उधर की भूमिका न बांधते हुए सीधे मुद्दे पर आते हैं। क्या औरतों के साथ होने वाली हिंसा का जाति से कोई संबंध है? जिस तरह हाथरस की घटना पर कहा जा रहा है कि लड़की दलित वर्ग से थी, इस कारण रेप हुआ। क्या यह तर्क और न्याय संगत है?

- *शेष पृष्ठ 2 पर*

विदेशी अंशदान विधेयक, 2020 का असर

एमनेस्टी इंटरनेशनल संस्था भारत क्यों छोड़ गई?

मानवाधिकारों के लिए काम करने वाली संस्था एमनेस्टी इंटर नेशनल ने भारत से अपना बोरिया बिस्तर समेट लिया है। पिछले कई सालों से विदेशी चंदा लेने को लेकर बने नियमों

को सख्त किया जाता रहा था और हजारों गैर-सरकारी संगठनों पर विदेशों से चंदा लेने पर पाबंदी लगाई गई थी। तब से एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया के पेट में मरोड़ था। अब एफसीआरए कानून ही बना दिया और एमनेस्टी के खिलाफ विदेशी चंदा लेने के कानून का उल्लंघन करने के संदेह में जाँच की जा रही है। इससे एमनेस्टी इंटरनेशनल घबरा गयी कि अगर ऐसा हुआ तो अपना एजेंडा कैसे आगे बढ़ाएगी। अब एमनेस्टी इंटर नेशनल का कहना है कि उसे भारत में अपना काम रोकने के लिए मजबूर किया गया। उससे बदला लेने के इरादे से उसके बैंक अकाउंट सीज कर दिए हैं। हालाँकि इसके जवाब में भारत सरकार ने कहा है कि भारत विदेशी दान से वित्त पोषित संस्थाओं को अपनी घरेलू राजनीतिक बहस में हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देता है। ये कानून सभी पर बराबर लागू होता है और एमनेस्टी इंटरनेशनल पर भी लागू होगा।

अव सवाल ये है कि क्या सच में भारत सरकार एमनेस्टी इंटरनेशनल से बदला ले रही है या एमनेस्टी इंटरनेशनल भारत सरकार और इस देश से बदला ले रही है?

- *शेष पृष्ठ 3 पर*

यू.पी.एस.सी. सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी कराने वाला आर्यसमाज का संस्थान

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान ने स्थापित किए नए कीर्तिमान

2021 बैच हेतु 20 हजार से अधिक पंजीकरण : आज ही कराएं अपने प्रतिभावान बच्चों का पंजीकरण

आवेदन की अन्तिम तिथि : 16 अक्तूबर, 2020 - जल्दी करें

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् संविधान निर्माताओं के द्वारा भारत की एक संप्रभुता संपन्न की राष्ट्र की परिकल्पना की गई।

देश के प्रथम गृहमंत्री और महान स्वतंत्रता सेनानी सरदार बल्लभ भाई पटेल ने अखिल भारतीय सिविल सेवाओं को भारत राष्ट्र की परिकल्पना में लौह स्तम्भ की भूमिका में इंगित किया। भारत के लोकतांत्रिक व्यवस्था में शासन सत्ता के तीन महत्वपूर्ण अंग होते हैं, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।

अखिल भारतीय सिविल सेवा विधायिका का एक महत्वपूर्ण अंग है। इन सिविल सेवकों के ऊपर राष्ट्र के सुचारू प्रबंधन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती हैं। इनके मजबूत कंधों पर राष्ट्र के राजकाज प्रबंधन के लिए नीति निर्माण से

लेकर धरातल पर क्रियान्वयन की संपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी जाती है। इस परिप्रेक्ष्य में यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो जाता है कि ये सिविल सेवक सत्यनिष्ठ, कर्मठ, देश की सभ्यता संस्कृति के प्रति जागरूक और सम्मान की भावना से ओत प्रोत होकर कार्य करने वाले, राष्ट्र निर्माण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने वाले हो।

इन उद्देश्यों के साथ ही भविष्य के सशक्त और समृद्ध भारत के निर्माण के लिए, आर्य समाज के द्वारा महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की स्थापना की गई।

इस संस्थान के माध्यम से आर्यसमाज से सम्बन्धित प्रतिभावान युवक-युवतीयों को जोकि भारतीय सिविल सेवा परीक्षा

- *शेष पृष्ठ 5 पर*

वेद-स्वाध्याय

पूर्ण पुरुष बनूं

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये साम प्राणं प्रपद्ये।
चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।। - यजुः. 36/1
ऋषिः दध्यङ्ङाथर्वणः।। देवता - अग्निः।। छन्दः पङ्क्तिः।।

शब्दार्थ - मैं **ऋचं वाचम्** = ऋग्रूप वाक् को **प्रपद्ये** = प्राप्त करता हूँ, **मनः यजुः** = यजुरूप मन को **प्रपद्ये** = प्राप्त करता हूँ **साम प्राणम्** = सामरूप प्राण को **प्रपद्ये** = प्राप्त करता हूँ और **चक्षुः श्रोत्रम्** = चक्षु-श्रोत्र आदि को **प्रपद्ये** = प्राप्त करता हूँ। ये **वाक्** = वाक्शक्ति आदि **ओजः** = वाक् आदि का ओज तथा सह **ओजः** = इनका इक्ट्ठा ओज **प्राणापानौ** = एवं प्राणन-अपानन क्रिया, आदान और विसर्ग क्रिया **मयि** = मुझमें हों, मुझमें ठीक प्रकार से होती रहें।

विनय - हे प्रभो! मैं पूर्ण पुरुष बनूँगा। इस प्रयोजन के लिए मैं ऋग्रूप वाग्देव की शरण आऊँगा, यजुरूप मनोदेव की शरण लूँगा और सामरूप प्राणदेव की शरण पकडूँगा। इस प्रकार अपनी तीनों शक्तियों को प्राप्त कर लूँगा। वाणी की भारी शक्ति को सम्पूर्ण ऋग्वेद द्वारा, सम्पूर्ण ज्ञानकाण्ड द्वारा, सम्पूर्ण श्रवण द्वारा प्राप्त कर लूँगा। सम्पूर्ण यजुर्वेद द्वारा, कर्मकाण्ड द्वारा, मन द्वारा अपनी मनः (दर्शन) शक्ति को समृद्ध कर लूँगा और अपनी प्राण-शक्ति को सम्पूर्ण सामवेद, उपासना काण्ड और निदिध्यासनों द्वारा प्रदीप्त कर लूँगा। इसी प्रकार चक्षु (विज्ञान) की महान् शक्ति को, श्रोत्र की विस्तृत शक्ति को, अन्य सब इन्द्रियों और अंगों की शक्ति को प्राप्त कर लूँगा। प्रत्येक अंग की शक्ति को इतनी पूर्णता के साथ प्राप्त कर लूँगा कि मुझे उस-उस अंग का ओज भी मिल जाएगा। 'ओज' वह सर्वोत्कृष्ट शक्ति है या वह सर्वोत्कृष्ट रूप है जिसे आत्मिक तेज समझना चाहिए। जब मैं अपनी वाक् आदि सब इन्द्रियों का वा आत्मांगों का ओज प्राप्त कर लूँगा तो सम्पूर्ण आत्मा का 'सह ओज' भी, सम्पूर्ण शरीर का सामूहिक तेज भी, मुझ सहज में ही प्राप्त हो जाएगा और इस ओज-प्राप्ति से मेरा जीवन परिपूर्ण जीवन हो जाएगा। एवं, परिपूर्ण जीवन में 'प्राण' और 'अपान' की जो दो जीवन-क्रियाएँ ठीक प्रकार से चला करती हैं, वे मुझमें अपना ठीक काम करती हुई स्थिर रहेंगी। ये आदान और विसर्ग की क्रियाएँ जब जहाँ बिगड़ती हैं तभी वहाँ जीवन बिगड़ता है और ह्रास होता है, अतः मुझमें जब इन प्राणापान क्रियाओं के द्वारा शारीरिक भोजन का आदान तथा शारीरिक दोषों का विसर्ग ठीक प्रकार होता रहेगा, एवं मानसिक और आत्मिक भोजन का भी आदान तथा मानसिक और आत्मिक मलों का विसर्ग ठीक प्रकार होता रहेगा, तो उस समय मेरा जीवन (शारीरिक, मानसिक और आत्मिक जीवन) जीवन बन जाएगा और हे प्रभो ! मैं तेरा परिपूर्ण पुरुष कहला सकूँगा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

हाथरस काण्ड : बलात्कार लड़की का या दलित .....

.....बलात्कार इस समाज के लिए सबसे भद्दी गाली है। बलात्कार में तन से ज्यादा मन रौंदा जाता है। अरसे से महिलाओं पर इस तरह के जुल्म ढाए जाते रहे हैं, लेकिन अब ट्रेंड यहां भी बदल चुका है। दलित महिला भंवरी देवी रही, उच्च वर्ग से हैदराबाद की डॉ प्रियंका रेड्डी, निर्भया कांड से लेकर बुलंदशहर कांड तक बता रहे हैं कि सवाल सिर्फ और सिर्फ दरिंदों से बच्चियों की सुरक्षा का है। 21वीं सदी आ गई, लेकिन घर से लेकर बाहर तक बहन-बेटियां असुरक्षित हैं। इस संवेदनशील मुद्दे पर आवाज ना उठाकर बलात्कार के अपराध को ऐसे रंग में रंगा जा रहा है जैसे दलित लड़की के साथ हुआ तो अपराध और उच्च वर्ग की महिला के साथ हुआ तो सही हुआ?.....

अगर मान भी लिया जाये तो इन सवालों के जवाब कौन देगा कि अगर लड़की उच्च वर्ग से होती और ऐसी घिनौनी घटना घट जाती तो क्या यह रेप नहीं माना जाता? दूसरा अगर दलित लड़की के साथ दलित वर्ग के लड़के रेप करते तो क्या वह भी रेप नहीं माना जाता? तीसरा अगर दलित लड़की के साथ समुदाय विशेष के लोग रेप करते तो क्या वह रेप नहीं होता? अगर लड़की समुदाय विशेष से होती और मजहबी लोग ही ऐसा करते तो क्या वह रेप नहीं माना जाता?

अगर इन सवालों का जवाब 'नहीं' है तो यकीन मानिये आपके दिल में महिलाओं के प्रति कोई संवेदना नहीं है। आप सिर्फ राजनीति कर रहे हैं! इस रेप को जातीय रंग रूप देकर वोटों की झोली भरना चाहते हैं। और अगर आपका जवाब ये है कि नहीं रेप तो रेप ही होता है उसका जातीय आधार नहीं होता। तो अब आप स्वयं सोचिये इस रेप को लेकर जो जातीय तमाशा आप क्या कर रहे हैं वह क्या है? शायद ये पूरे समाज का रेप है। पूरी महिला जाति का रेप है? क्योंकि आज ऐसा कहने वाले न तो अपने घरों में झांककर देखते हैं, न दिलों में। आंकड़ों की तो बात ही छोड़ दीजिये?

काफी लम्बा हो गया। अब तक इस देश के राजनितिक दल, कथित महिलावादी औरतों के साथ होने वाली हिंसा में जाति की मौजूदगी ढूंढ़ रहे हैं। इसकी शुरुआत करीब 15 वर्ष पहले हुई जब अखबारों में बलात्कार में जाति की तलाश की गयी थी। सुर्खियां लगनी शुरू हुई - दलित लड़की से बलात्कार क्योंकि दलित राजनीति देश में हावी हुई थी। इसके बाद यह सब चीजें डिजिटल मीडिया का हिस्सा बनी और अब सोशल मीडिया आने के बाद इसने समाज को तोड़ने में अहम् भूमिका निभाना शुरू कर दिया। बहरहाल अभी समाज इस सवाल का जवाब देने में उलझा है कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता। तो क्या बलात्कारियों की कोई जाति होती है? कोई धर्म होता है? मेरी राय में आतंक का धर्म हो न हो लेकिन बलात्कारियों की कोई जाति नहीं होती, कोई धर्म नहीं होता। लेकिन बलात्कार पर समाज कैसे प्रतिक्रिया करेगा, जब ये देखता हूं तो लगता है कि बलात्कारियों की हो न हो, लेकिन बलात्कार के शिकारों की जाति जरूर होती हैं।

छोटी-छोटी घटना पर छाती कूटने वाले बौद्धिक, वामपंथी, कुछ स्वघोषित और पोषित सेकुलर क्या ये बता सकते है कि बुलंदशहर एन एच 91 पर उच्च जाति की माँ और बेटी की दर्जनों मजहबी समुदाय के दरिन्दे पूरी रात अस्मत लूटते रहे क्या वह बलात्कार नहीं था? लेकिन ऐसी घटनाओं पर जब जाति की दुकान नहीं चलती तो बड़ी-बड़ी बिंदी लगाकर वामपंथी महिला ब्रिगेड बहन-बेटियों की सुरक्षा के प्रति चिंता जता देती हैं। लेकिन जैसे ही पता चलता है कि फलां जगह रेप पीडिता दलित वर्ग से थी तो जातीय आन्दोलन चला देती हैं। लेकिन इसमें भी अंतर है। कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश के कौशांबी जिले के अकिल थाना क्षेत्र में एक दलित लड़की के साथ वर्ग विशेष के तीन युवकों द्वारा सामूहिक दुष्कर्म की घटना सामने आई थी। तब विपक्ष के नेताओं द्वारा कोई बयान या आन्दोलन देखने को नहीं मिला। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि रेप जैसे घिनौने कृत्य पर कैसे सलेक्टिव राजनीति का चलन इस देश में चल पड़ा है।

आज हम एक सवाल सभी राजनितिक दलों, महिलावादी संगठनों, वामपंथियों से पूछना चाहते हैं कि क्या अब बलात्कार की पीड़ित महिलाओं, बच्चियों की जाति तय करने जा रहे हैं? अगर हाँ तो इससे महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों में क्या लाभ समाज को होगा? क्या इससे ऐसा नहीं होगा कि आगे स्वर्णों की बेटियों से बलात्कार की घटनाओं से कुछ लोगों का अहंकार संतुष्ट होगा कि चलो अच्छा हुआ ये तो हमारी जाति की नहीं थी?

बलात्कार इस समाज के लिए सबसे भद्दी गाली है। बलात्कार में तन से ज्यादा मन रौंदा जाता है। अरसे से महिलाओं पर इस तरह के जुल्म ढाए जाते रहे हैं, लेकिन अब ट्रेंड यहां भी बदल चुका है। दलित महिला भंवरी देवी रही, उच्च वर्ग से हैदराबाद की डॉ प्रियंका रेड्डी, निर्भया कांड से लेकर बुलंदशहर कांड तक बता रहे हैं कि सवाल सिर्फ और सिर्फ दरिंदों से बच्चियों की सुरक्षा का है। 21वीं सदी आ गई, लेकिन घर से लेकर बाहर तक बहन-बेटियां असुरक्षित हैं। इस संवेदनशील मुद्दे पर आवाज ना उठाकर बलात्कार के अपराध को ऐसे रंग में रंगा जा रहा है जैसे दलित लड़की के साथ हुआ तो अपराध और उच्च वर्ग की महिला के साथ हुआ तो सही हुआ?

आए दिन गैंगरेप की घटनाएं सुनने में आती हैं। यह समाज के लिए शर्मनाक है। अनुरोध है कि अब रेप, गैंगरेप जैसी घटनाओं में भी जाति मत खोजिए। बलात्कार पीड़ितों की कोई जाति नहीं होती, कोई धर्म नहीं होता, बलात्कारियों की भी कोई जाति, कोई धर्म नहीं होता। हाथरस में एक इंसान की बेटी को दरिंदों ने रौंदा है। समाज अगर इन दरिंदों के खिलाफ एकजुट नहीं हुआ तो अगला परिवार किसी का भी हो सकता है। आपका भी, हमारा भी। आपकी भी बेटी, हमारी भी बेटी। हमारे, आपके, सबके घर में बहुएं हैं, बेटियां हैं। हाथरस की घटना पर आराम से सोचिये और मन में जवाब तलाशिये कि बलात्कार लड़की का हुआ या दलित लड़की का? - ***सम्पादक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत

वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अतः समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण '**सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका**' के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**' के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष

एमनेस्टी इंटरनेशनल संस्था भारत क्यों.....

....जो-जो एमनेस्टी कह रही थी, वही खबर पाकिस्तान के अखबार, अरब का अल जजीरा पहले ही छाप चुका था। किसी की भी रिपोर्ट में हेडकांस्टेबल रतनलाल की हत्या, आई बी के कांस्टेबल अंकित शर्मा को चार सौ बार चाकू से गोदने समेत किसी भी हिन्दू या सरकार के पक्ष की बात नहीं लिखी।

केवल इतना भर नहीं, पिछले साल जब कश्मीर से धारा 370 हटाई गयी। मानवाधिकार आयोग जिसका इससे कुछ लेना देना नहीं लेकिन इसका सबसे ज्यादा विरोध इन लोगों के द्वारा ही किया गया। गिरफ्तार किये उत्पाती नेताओं, कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुद्दा बनाया था। यही नहीं 2016 के अगस्त में, एमनेस्टी इंडिया के खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया था कि उसके एक कार्यक्रम में भारत के टुकड़े-टुकड़े करने के नारे लगे।.....

असल में अगस्त महीने में एमनेस्टी इंटरनेशनल ने उत्तर-पूर्वी दिल्ली में फरवरी में हुए दंगों पर कहने को तो अपनी स्वतंत्र जाँच रिपोर्ट जारी की थी। ये रिपोर्ट कितनी स्वतंत्र थी, इसका अंदाजा आप रिपोर्ट सुनकर स्वयं लगा लीजिये। रिपोर्ट में दिल्ली पुलिस पर दंगे ना रोकने, उनमें शामिल होने, फोन पर मदद मांगने पर मना करने, पीड़ित लोगों को अस्पताल तक पहुंचने से रोकने, खासतौर पर मुसलमान समुदाय के साथ मारपीट करने जैसे संगीन आरोप लगाए गए थे। सबसे बड़ा आरोप ये था कि जब मुस्लिम समुदाय द्वारा दिल्ली पुलिस के आपातकालीन नंबर पर फोन किया तो या तो किसी ने उठाया नहीं या फिर पलटकर कहा, आजादी चाहिए थी ना, अब ले लो आजादी।

रिपोर्ट में ये भी कहा कि इसमें सबसे पहले 15 दिसंबर 2019 के जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में दिल्ली पुलिस के नागरिकता संशोधन कानून सीएए के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे छात्रों से मारपीट और उनका यौन उत्पीड़न किया। इसके जवाब में दिल्ली पुलिस ने रिपोर्ट का खंडन करते हुए अखबार द हिंदू से कहा था कि एमनेस्टी की रिपोर्ट एकतरफा, पक्षपाती और विद्वेषपूर्ण है यानि रिपोर्ट फंडिंग है क्योंकि जो-जो एमनेस्टी कह रही थी, वही खबर पाकिस्तान के अखबार, अरब का अल जजीरा पहले ही छाप चुका था। किसी की भी रिपोर्ट में हेडकांस्टेबल रतनलाल की हत्या, आई बी के कांस्टेबल अंकित शर्मा को चार सौ बार चाकू से गोदने समेत किसी भी हिन्दू या सरकार के पक्ष की बात नहीं लिखी।

केवल इतना भर नहीं, पिछले साल जब कश्मीर से धारा 370 हटाई गयी। मानवाधिकार आयोग जिसका इससे कुछ लेना देना नहीं लेकिन इसका सबसे ज्यादा विरोध इन लोगों के द्वारा ही किया गया। गिरफ्तार किये उत्पाती नेताओं, कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुद्दा बनाया था। यही नहीं 2016 के अगस्त में, एमनेस्टी इंडिया के खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया था कि उसके एक कार्यक्रम में भारत के टुकड़े टुकड़े करने के नारे लगे।

इससे पहले बाटला हाउस एनकाउंटर पर भी जिसमें दो आतंकी मारे गये और दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर मोहनचंद शर्मा शहीद हुए थे। तब मानवाधिकार समूह भी इस एनकाउंटर पर सवाल उठा रहा था। इसके अलावा आतंकी इशरत जहां एनकाउंटर पर एमनेस्टी इंडिया खूब रोया, सोहराबुद्दीन शेख एनकाउंटर पर एमनेस्टी इंडिया खूब सिसका, रोहित वेमुला की आत्महत्या, या अखलाक, या फिर पहलु खां की हत्या एमनेस्टी इंडिया ने विश्व भर में भारत में बढती असहिष्णुता का ढ़ोल बजाया। लेकिन जब मुंबई ब्लास्ट में सैंकड़ों लोगों के हत्यारे याकूब मेनन को फांसी पर चढ़ाया गया तो एमनेस्टी इंडिया और 40 लिब्रांडू सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे पर पूरी रात बैठे रहे। तब किसी ने इनसे एक सवाल ये नहीं पूछा कि जब आतंकियों के मानवाधिकार हैं तो आतंकी हमलों में मरने वाले मासूम लोगों के मानवाधिकार कहाँ पर है?

शायद यही कारण है कि 2016 में रूस ने एमनेस्टी इन्टरनेशनल रशिया का झोला उठाकर देश से बाहर फेंक दिया था। क्योंकि इन्हें सिर्फ आतंकियों और मुस्लिमों के मानवाधिकार दिखाई देते हैं। कश्मीर में पत्थरबाजों के मानवाधिकार दिखाई देते हैं लेकिन सैनिकों के नहीं। अप्रैल 2017 में पत्थरबाजों से खुद को बचाने के लिए सेना की जीप पर बांधकर घुमाए गए मानव कवच फारूक अहमद डार के लिए एमनेस्टी इंडिया ने 10 लाख रुपये का मुआवजे की मांग सेना से की थी। तब सैनिकों के बच्चों ने इन्हीं लोगों से सवाल पूछा था क्या कश्मीर में पत्थरबाजों के ही मानवाधिकार होते हैं, सैनिकों के नहीं?

भारत में ही नहीं भारत के बाहर भी इनका यही हाल है। पाकिस्तान में जुल्मों का शिकार हुई एक हिन्दू लड़की रिंकल का मामला अमेरिका की संसद तक गूंजा था, लेकिन एमनेस्टी को रिंकल की चीख सुनाई नहीं दी थी? शायद तब ये लोग बहरे हो गये थे। नतीजा रिंकल अब फरियाल के नाम से जानी जाती है और जबरदस्ती के पति नवीद शाह के साथ रहने को मजबूर है। जबकि उसी दौरान पाकिस्तान के अन्दर करीब 47 हिंदू लड़कियों का रेप आदि के बाद धर्म परिवर्तन करा दिया गया। लेकिन इन मामलों पर इनका मानवधिकार मर जाता है?

एमनेस्टी का अन्य देशों में भी जान-बूझकर हस्तक्षेप करने का लम्बा रिकार्ड रहा है। यह हमेशा राष्ट्रों को कमजोर करने वाला एक राजनितिक उद्देश्य वाला संगठन रहा है। 60 के दशक में ब्रिटेन में एमनेस्टी इण्टरनेशनल का जन्म हुआ और धीरे-धीरे इसका फैलाव होता रहा। कई सालों तक अपने उद्देश्य की पूर्ति करने लगी एमनेस्टी वर्ष 2000 में लिबरल, वामपंथी, अराजकवादियों के हाथ चली गयी। ये लोग इसका इस्तेमाल आतंकियों को बचाने में करने लगे।

ये हम नहीं बल्कि अवार्ड वापसी गैंग की सरगना नेहरू की भांजी नयनतारा सहगल की बेटी गीता सहगल ने संस्था से अलग होकर 2010 में कहा था कि संस्था वैचारिक रूप से दिवालिया और महिला विरोधी हो चुकी है, सिर्फ सलेक्टिव मुद्दों पर ही बोलती है। यही कारण है नक्सली हों, या वामपंथी या कथित धर्मनिरपेक्ष, सब इस संस्था को अपना रक्षक मानते है। सिर्फ इतना ही नहीं जम्मू का कठुवा कांड तो याद ही होगा जब इस कांड के बाद जब कानून बना कि अगर कम उम्र लड़की के साथ रेप होता है और दोषी को फांसी दे जाएगी। इसके ठीक बाद एमनेस्टी ने आर्टिकल छापा और उसमें लिखा की अगर ये कानून बन गया इससे देश के मुसलमानों को दिक्कत होने लगेगी। मतलब हिन्दू करें रेप और कथित अल्पसंख्यक करें तो शरियत का हिस्सा। कमाल का दोगलापन लेकर एमनेस्टी भारत से झोला उठाकर गयी। अब इसके बच्चें फिर रोयेंगे, फिर विलाप होगा, फिर लोकतंत्र की हत्या और संविधान पर खतरा बताया जायेगा।- ***विनय आर्य, महामन्त्री***

प्रेरक प्रसंग

मेरे साथ बहुत लोग थे

पाँच-छह वर्ष पुरानी बात है। अजमेर में ऋषि-मेले के अवसर पर मैंने पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी से कहा कि आप बहुत वृद्ध हो गये हैं। गाड़ियों, बसों में बड़ी भीड़ होती है। धक्के-पर-धक्के पड़ते हैं। कोई चढ़ने-उतरने नहीं देता। आप अकेले यात्रा मत किया करें।

स्वामीजी महाराज ने कहा, 'मैं अकेला यात्रा नहीं करता। मेरे साथ कोई-न-कोई होता है।'

मैंने कहा, 'मठ से कोई आपके साथ आया? यहाँ तो मठ का कोई ब्रह्मचारी दीख नहीं रहा।'

स्वामीजी ने कहा, 'मेरे साथ गाड़ी में बहुत लोग थे। मैं अकेला नहीं था।'

यह उत्तर पाकर मैं बहुत हँसा। आगे क्या कहता? बसों में, गाड़ियों में भीड़ तो होती ही है। मेरा भाव भी तो यही था कि धक्कमपेल में दुबला-पतला शरीर कहीं गिर गया तो समाज को बड़ा अपयश मिलेगा। मैंने यह वार्तालाप स्वामी ओमानन्दजी व स्वामी सुमेधानन्दजी को भी सुनाया।

जब लोग अपनी लीडरी की धौंस जमाने के लिए व मौत के भय से सरकार से अंगरक्षक माँगते थे। आत्मा की अमरता की दुहाई देनेवाले जब अंगरक्षकों की छाया में बाहर निकलते थे तब यह संन्यासी सर्वव्यापक प्रभु को अंगरक्षक मानकर सर्वत्र विचरता था। इसे अग्रवादियों से भय नहीं लगता था। आतंकवाद के उस काल में यही एक महात्मा था जो निर्भय होकर विचरण करता था। स्वामीजी का ईश्वर विश्वास सबके लिए एक आदर्श है। मृत्युंजय हम और किसे कहेंगे? स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज 'अपने अंग-संग सर्वरक्षक प्रभु पर अटल विशवास' की बात अपने उपदेशों में बहुत कहा करते थे। स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के उस कथन को जीवन में उतारनेवाले स्वामी सर्वानन्दजी भी धन्य हैं। प्रभु हमें ऐसी श्रद्धा दें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

आर्यसमाज कोटा ने सेवा कार्यों के साथ मनाया सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी का जन्मदिवस

महर्षि दयानंद सरस्वती के कार्यों को आगे बढ़ाता रहूं यही मेरे जीवन का है उद्देश्य-सुरेश चंद्र आर्य

कोटा,1अक्टूबर। आर्य समाज कोटा द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान सुरेश चंद्र आर्य का जन्म दिन सेवा एवं सहायता के विभिन्न कार्य करके हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया ।

इस बारे में जानकारी देते हुए आर्य

समाज के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि विश्व में आर्य समाज की सौर्य संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चंद्र आर्य का 80वां जन्म दिवस कोटा में सेवा व सहायता के कार्यक्रमों के आयोजन के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज कोटा के कार्यकर्ताओं को संदेश देते हुए सुरेश चंद्र आर्य ने कहा कि सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रसार हो ,प्राणी मात्र का कल्याण व विश्व में शांति रहे इसके लिए हम सभी महर्षि दयानंद सरस्वती के कार्यों को करते रहें और मेरे जीवन का भी यही उद्देश्य है कि आर्य समाज के कार्यों में मैं समर्पित भाव से लगा रहा हूं।

उन्होंने कहा कि कोटा में अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में धार्मिक सामाजिक आध्यात्मिक व जनकल्याण के सेवा व सहायता के जो कार्य किए जा रहे हैं वह प्रशंसनीय और अभिनंदनीय हैं। इसके लिए आर्य समाज कोटा के सभी कार्यकर्ताओं वह पदाधिकारियों को शुभकामनाएं तथा आप सभी इसी प्रकार से परोपकार के कार्य करते रहें।

यज्ञ (हवन) -

सुरेश चंद्र आर्य के जन्म दिवस के अवसर पर आर्य समाज कोटा के कार्यकर्ताओं ने सर्वप्रथम प्रातःकाल आर. पी. आर्य के ब्रह्मत्व में महावीर नगर लाइब्रेरी पार्क में यज्ञ का आयोजन किया जिसमें आर्य जनों ने गिलोय आदि विशेष औषधियों से

निर्मित हवन सामग्री से वैदिक मंत्रोच्चार पूर्वक आहुतियां दी। इस अवसर पर परम पिता परमेश्वर से सुरेश चन्द्र आर्य के शतायु होने की कामना करते हुए प्रार्थना की गई। यज्ञ में आर्य समाज महावीर नगर के प्रधान रामचरण आर्य, मंत्री राघावल्लभ राठौड़, किशन आर्य हरियाणा ,राजेंद्र गुप्ता, विष्णु गर्ग, अनीता अग्रवाल ,रामभरोस नागर, घासी लाल ,विमलेश आर्य ने सम्मिलित हो आहुतियां प्रदान की।

निराश्रित बालको को खाद्यान्न पैकेट वितरित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चंद्र आर्य के जन्मोत्सव पर आज आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि

प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में रामबाड़ी स्थित निराश्रित बाल गृह मधुर स्मृति पहुंचे।इस अवसर पर कार्यकर्ता राघावल्लभ राठौड़ ,किशन आर्य हरियाणा ,विमलेश आर्य, राजीव आर्य ने निराश्रित बच्चों को बिस्किट चिप्स और खाद्यान्न के पैकेट वितरित किए।

इस अवसर पर शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए निराश्रित बालगृह के बच्चों द्वारा सस्वर गायत्री मंत्र का सामूहिक रूप से पाठ किया गया और शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

गौ माता की खिलाई खलचूरी व हरा चारा-

आर्य समाज कोटा के कार्यकर्ताओं ने आज खड़े गणेश जी मंदिर सर्किल स्थित गौशाला में अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में राघावल्लभ राठौड़, विमलेश आर्य ,राजीव आर्य किशन आर्य हरियाणा ने प्रधान सुरेश चंद आर्य के जन्म दिवस के अवसर पर गायों को खलचुरी एवं हरा चारा खिलाया।

कुष्ठ रोगियों को खाद्यान्न व चादर भेंट

आर्य कार्यकर्ता अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में राघावल्लभ राठौर, लालचंद आर्य, किशन आर्य हरियाणा ,विमलेश आर्य ने

वीर सावरकर नगर स्थित कुष्ठ रोग बस्ती में कुष्ठ रोगी परिवारों को खाद्यान्न के पैकेट और चादरें वितरित की। इस बारे में अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि बस्ती में रहने वाले कुष्ठ रोगी परिवारों के बच्चों को बिस्किट व चिप्स के पैकेट बांटे गए।स्थानीय निवासी रेखा ने आर्य समाज के इस सेवा कार्य की प्रशंसनीय बताया।उसने कहा कि आर्य कार्यकर्ता समय समय पर आकर विभिन्न सेवा कार्य करते हैं ।

विकलांग सेवा कार्य-

इस अवसर पर आर्य कार्यकर्ता अर्जुनदेव चड्ढा के साथ सुश्री शिखा अदालखा ,कीर्ति चड्ढा मानसी चड्ढा और राजीव आर्य ने कोटा एरोड्रम के सामने

हनुमान मंदिर परिसर मे तिपहिया साइकिल पर चलने वाले दिव्यांग जनों को बिस्किट व चिप्स के पैकेट तथा चादरें प्रदान की।

आटे के कट्टों का किया वितरण

सुरेश चंद्र आर्य के जन्म दिवस के उपलक्ष में कार्यकर्ताओं द्वारा जरूरतमंद निर्धन परिवारों को आटे के कट्टे व खाद्यान्न किट दिए गए। अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि आर्य कार्यकर्ताओं किशन आर्य हरियाणा, रामभरोस नागर, आर्यन कश्यप ने सुभाष नगर के पास झोपड़पट्टी बनाकर रहने वाले निर्धन परिवारों को आटे के कट्टे व खाद्यान्न के किट वितरित किए।

फेस मास्क किये वितरित-

आर्य कार्यकर्ताओं ने कोरोना महामारी के संक्रमण से बचाव के लिए आज आर्य समाज के अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्य समाज महावीर नगर के मंत्री राघावल्लभ राठौड़ ,तलवंडी के राम कुमार हरियाणा

वाले व अन्य जनों ने मास्क वितरित किए । इस बारे में चड्ढा ने बताया कि भीड़भाड़ वाले केशवपुरा चौराहे पर खड़े होकर आर्य कार्यकर्ताओं ने वहां से गुजर रहे जनों को आवाज लगाकर रोका और कोविड-19 के संक्रमण से बचाव के लिए जागरूक करते हुए मास्क प्रदान किए। साथ ही 2 गज की सामाजिक दूरी को बनाए रखने के बारे में जागरूक किया।

कोटा आर्य समाज के सभी प्रतिनिधियों ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान सुरेश चंद आर्य जी से उनके 80वें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए उनके शतायु होने की कामना की।

बाल बोध

लक्ष्य और निष्ठा

छात्र अवस्था जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय माना गया है। इस अनमोल समय में विद्यार्थी अपने को जैसा ढाल लेता है फिर वैसा ही उसका स्वभाव आगे बनता चला जाता है। विद्यार्थी जीवन ही अपने निर्माण का विशेष अवसर है। यही विद्यार्थियों का निर्माण राष्ट्र का भविष्य और विश्व की आशा सिद्ध होता है। इसलिए तो कहा जाता है कि छात्र अवस्था मानव जीवन की बुनियाद है। विद्यार्थी जीवन में लक्ष्य का निर्धारण जरूर होना चाहिए, बिना लक्ष्य के किए गए सभी प्रयास वैसे ही असत्य होते हैं जैसे नहाने के बाद फिर धूल में लेट जाने से हाथी का स्नान करना व्यर्थ हो जाता है। अत: हमारा पूरा प्रयास अपने लक्ष्य की तरफ होना चाहिए, अन्यथा हमारे द्वारा किया गया सारा प्रयास निरर्थक साबित हो सकता है।

विद्यार्थी जीवन में लक्ष्य प्राप्ति तभी संभव होती है, जब उसके साथ हमारी निष्ठा जुड़ी हुई हो। निष्ठा जितनी प्रखर होगी, मंजिल उतनी ही करीब होगी। लक्ष्य के बिना निष्ठा अधूरी है और निष्ठा के बिना लक्ष्य हमेशा कोशों दूर है। निष्ठा का अर्थ है निरंतर स्थिरता। मतलब जीवन में जब भी असफलता मिले तो समझ लेना चाहिए कि हमारी निष्ठा में कुछ कमी आई है। क्योंकि निष्ठावान प्रयत्नशील व्यक्ति ही जीवन में ऊंचाइयों को प्राप्त करते हैं, उंचाइयों पर आरूढ़ होने वाले हर विद्यार्थी को पहले सही लक्ष्य का निर्णय करना चाहिए, लक्ष्य प्राप्ति की सही योजना बनानी चाहिए और उसके पश्चात निष्ठा पूर्वक योजनाओं को क्रियान्वित करते हुए अपने कदम मंजिल की ओर आगे बढ़ाने चाहिए, तभी सफलत प्राप्त होती है।

कई बार जीवन में लक्ष्य और निष्ठा के अभाव में हमारे सफलता की ओर बढ़ते हुए कदम भी डगमगाने लगते हैं। मन में आशंका घर कर जाती है कि कहीं फिसल ना जाएं, उस समय धैर्य की आवश्यकता पड़ती है। धैर्य बनाए रखें साथ में यह भी देखना होता है कि कहीं हमारे कदम दिशा से भटक न जाएं, कहीं धोखा न खा जाएं, कहीं असफल न हो जाएं, कहीं यह न हो जाए और कहीं वह न हो जाए? मतलब इस तरह की डावांडोल स्थिति में कई बार हम अपनी मंजिल के करीब आकर भी भटक जाते हैं, अत: हमें अपने कदमों को कुछ आगे बढ़ाने के लिए कभी-कभी पीछे मुड़कर देखना भी जरूरी होता है, मतलब हमारे सारे आयास और प्रयासों में क्या-क्या सुधार संभव हैं, कहीं हमने दिशा तो गलत नहीं पकड़ ली है, कहीं हमारी गति ज्यादा तेज या धीमी तो नहीं है? यह प्रक्रिया बार-बार दोहराने से योग्यता का समुचित विकास होता है, यह प्रक्रिया जीवन के सभी क्षेत्रों में समान रूप से उपादेय सिद्ध हाती है। अगर कोई किसी प्रकार की गलतियां होती हैं तो वे धीरे-धीरे ठीक होती जाती हैं। सतर्कता की इस प्रवृत्ति को ही सिंहावलोकन कहते हैं। जंगल का राजा शेर सदैव अपनी यात्रा में बार-बार पीछे मुड़कर देखता है जिससे उसे अपने अंतर में झांकने का भी अवसर मिलता है, इसी से उसका वन में एकछत्र राज्य बना रहता है।

जीवन के निर्माण में अत्यंत सर्वोपरि है अध्ययन की निरंतरता। इसके लिए जरूरी है समय का दृढ़ता से पालन करना, अध्ययन में सफलता का प्रथम अंग है घड़ी की सुई से बंधा हुआ नियमित जीवन। अपनी दिनचर्या में आपके जीवन को एक एक सेकंड का निश्चित कार्यक्रम होना चाहिए। जीवन की सफलता घड़ी की घंटे, मिनट, सेकंड की सुइयों की नोक पर घूमती है, समय का हर क्षेत्र में कड़ाई से पालन करने पर ही सफलता मिलती है। अध्ययन में विशेषता ग्रहण करने के लिए अपने मस्तिष्क को समझना भी जरूरी है। अखिल ज्ञान-विज्ञान तथा कर्म कुशलता का अक्षय स्रोत हमारा मस्तिष्क ही है। जीवन के ऊंचे शिखर पर पहुंचने के लिए मस्तिष्क को समझना जरूरी है। ब्रह्म और ब्रह्मांड के सभी रहस्यों का उद्घाटन करने वाला हमारा मस्तिष्क ही है। इसलिए माथे को हमेशा ठंडा और शांत रखना चाहिए। क्रोध, उत्तेजना, चिड़चिड़ापन, तनाव, अवसाद, आलस्य ये सब मस्तिष्क को रोगी बनाते हैं क्रोध का अर्थ है पागलपन और उत्तेजना तथा चिडचिड़ापन मस्तिष्क की सबसे बडी परेशानी है। स्वस्थ और पवित्र विचारों को अपने भीतर जगह दें, अस्वस्थ और निराशाजनक विचार मस्तिष्क को सदा कमजोर बनाते हैं। यह जरूर ध्यान रहे कि पवित्र विचार ही मानव मस्तिष्क को शक्ति दे सकते हैं। विचारों को पवित्र करने के लिए चिंतन जरूरी है। चिंतन करने से जहां मस्तिष्क को शांति मिलती है , वहीं भविष्य उज्जवल बनता है, चिंतन जितना गहरा होगा, उतना ही विद्यार्थी का जीवन सफल होगा।

दिहाड़ी मजदूरों को राशन वितरण

आर्यसमाज रानी बाग, दिल्ली द्वारा क्षेत्र के दिहाड़ी मजदूरों को दिनांक 6 अक्तूबर, 2020 को राशन का वितरण किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी सहित अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

- प्रचार मन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास.....

(IAS/IPS/IFS/IRS etc) की तैयारी कर रहे छात्रों को हरसंभव सहायता प्रदान की जाती है। अर्थात् दिल्ली में रहने, खाने, कोचिंग तथा उचित मार्गदर्शन की उत्तम व्यवस्था की जाती है।

विशेष रूप से वैसे अभ्यर्थी जिनकी योग्यता तो होती है परंतु पारिवारिक, आर्थिक परिस्थितियाँ ऐसी नहीं होती की वे दिल्ली में कोचिंग, आवास, भोजन का खर्च वहन कर सकें। ऐसे में उनकी योग्यता और प्रतिभा देश के काम नहीं आ पाती है। ऐसे अभ्यर्थी संस्थान से जुड़कर एक नई ऊर्जा के साथ अपनी परीक्षा की तैयारी को एक नया आयाम दे सकते हैं।

होते हैं। जिसके लिए संस्थान द्वारा निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षा ली जाती है। जिसके लिए अमूमन देश के करीब पंद्रह से ज्यादा अलग-अलग शहरों में परीक्षा केंद्र बनाए जाते हैं।

लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए संस्थान द्वारा निर्धारित केंद्र पर साक्षात्कार के लिए उपस्थित होना होता है। अभ्यर्थियों को उनकी योग्यता के आधार पर चयन किया जाता है।

आपको जानकर हर्ष होगा कि इस वर्ष 2019-20 की सिविल सेवा परीक्षा में संस्थान के सहयोग और अपनी प्रतिभा,

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी

अनिल कुमार राठौड़ (आई.ए.एस.)

अंजू गर्ग (आबकारी निरीक्षक)

कीर्ति यादव (सहा. कमांडेंट, CRPF)

अमित कुमार (UPSC IES - Rly)

राहुल राहंगडाले (BHEL- HR MANAGER)

अभिषेक तिवारी (FCI गुणवत्ता निरीक्षक)

संस्थान से जुड़ने के लिए अभ्यर्थियों को एक चयन प्रक्रिया से गुजरना होता है। जिसके लिए संस्थान प्रत्येक वर्ष चयन प्रक्रिया का आयोजन करता है।

संस्थान के चयन प्रक्रिया में सबसे पहले Online Registration और Application फॉर्म भरना होता है। जिसे आप संस्थान की वेबसाइट www. pratibha vikas.org पर जाकर भर सकते हैं।

आवेदन किए हुए अभ्यर्थियों के शैक्षणिक योग्यता और अन्य मानकों के आधार पर एक मेधा सूची तैयार की जाती है। इन अभ्यर्थियों को ही लिखित परीक्षा के लिए आमंत्रित किया जाता है।

लिखित परीक्षा दो चरणों में होती है। प्रथम चरण में बहुविकल्पीय प्रश्न होते हैं। जिसके लिए ऑनलाइन परीक्षा होती है। द्वितीय चरण में वर्णनात्मक प्रश्न

लगन और परिश्रम से, अनिल कुमार राठौड़ (मध्यप्रदेश) ने अंतिम रूप से चयनित होकर भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) जैसे प्रतिष्ठित पद को प्राप्त किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में संचालित महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के विद्यार्थियों ने विगत वर्ष में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। संस्थान के अन्य विद्यर्थियों ने भी देश की अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की है।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के सम्बन्ध में – पंजीकरण, प्रवेश, परीक्षा अदि किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए www.pratibhavikas.org अथवा मो. नं. 9311721172 अथवा Email : dss.pratibha@gmail.com से सम्पर्क करें।

– ***प्रबन्धक***

Regn. No. S - 8149/1976
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.org
✿ ओ३म् ✿
२३३६०१५० २३३६५९५९ फैक्स : २३३६५९५९
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)
The Delhi Arya Pratinidhi Sabha
१५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली - ११०००१

क्रमांक :2020-21/241/दिल्ली सभा दिनांक : 3 अक्तूबर, 2020

कोरोना महामारी (अनलॉक-5) में सरकार द्वारा जारी आवश्यक दिशा-निर्देश
समस्त आर्यसमाजों के अधिकारीगण कृपया ध्यान दें
31 अक्तूबर, 2020 तक लागू रहेंगे ये नियम

माननीय महोदय/महोदया,

सादर नमस्ते!

वैश्विक महामारी कोरोना की स्थिति को देखते हुए भारत सरकार के निर्देशानुसार लागू हुई अनलॉक-1 की प्रक्रिया में सभी धार्मिक संस्थाओं में धार्मिक - सांस्कृतिक गतिविधियां आरंभ हुईं। वर्तमान में अनलॉक-4 के बाद 1 अक्तूबर से अनलॉक-5 लागू किया गया है तथा 31 अक्तूबर, 2020 तक दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं –

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में हम सबको सावधानीपूर्वक कार्य करने हैं जिससे हमारे आर्यसमाज मन्दिर एवं संस्थान को या हमारे सदस्यगणों को यह महामारी प्रभावित न कर सके। अतः दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आप सबसे निम्न बिंदुओं पर विशेष ध्यान देने का अनुरोध करता हूं –

★ साप्ताहिक सत्संगों का नियमित आयोजन करें। अधिकतम 100 की संख्या तक आर्यजन शारीरिक दूरी एवं अनिवार्य मास्क के साथ सम्मिलित हो सकते हैं।

★ स्वास्थ्य की दृष्टि से योगासन आदि की कक्षाएं मास्क एवं दो गज की अनिवार्य शारीरिक दूरी के साथ नियमित रखें।

★ यज्ञशाला तथा सत्संग हॉल के बाहर हाथ धोने की सुचारू व्यवस्था हो। सभी सम्मिलित लोग स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें तथा शारीरिक दूरी बनाए रखें।

★ विवाह व सामाजिक कार्यक्रमों को आयोजित करने में सरकारी दिशा-निर्देशों का सख्ती से पालन करें। वर-वधु पक्ष/कार्यक्रम आयोजक आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कुल 100 से अधिक न हों, इसका ध्यान रखें।

★ विवाह आदि आयोजन हेतु आवेदन पत्र में एक बिंदु लिखा जाएगा कि 'मैं कोविड-19 के बचाव के लिए सरकार द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करूंगा।'

★ किसी भी समारोह/कार्यक्रम/उत्सव में शामिल लोगों के मोबाइल में आरोग्य सेतु एप्प अवश्य इंस्टाल होना चाहिए।

★ ध्यान दिया जाए कि 65 वर्ष से अधिक आयु लोग/गम्भीर बीमारी से ग्रस्त लोग, गर्भवती महिलाएं एवं 10 वर्ष की आयु से छोटे बच्चे किसी आयोजन में सम्मिलित न हों।

★ सभी व्यक्ति तथा आर्य समाज के सहयोगी सदस्यगण अनिवार्य शारीरिक दूरी बनाकर रखें, मास्क अनिवार्य रूप से पहने, सैनिटाइजर/साबुन का अवश्य उपयोग करें।

★ किसी भी आयोजन से पहले और बाद में सफाई की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए। सम्पूर्ण आर्यसमाज के परिसर को पार्किंग एरिया सहित सैनेटाइज्ड अवश्य कराएं।

★ समाज के उत्सवों/प्रचार कार्यक्रमों/वेद कथाओं आदि सभी गतिविधियों को आरम्भ कर दें और सत्संग हॉल की क्षमता के 50 प्रतिशत उपस्थिति ही रखें।

★ यदि आपकी आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन अभी नहीं हुआ है तो नए निर्वाचन के लिए तैयारी आरम्भ कर दें और अगले माह तक अवश्य करा लेवें।

★ सभा की ओर से निर्वाचन अधिकारी आपकी आर्यसमाज की मांग के अनुसार चुनावों हेतु भेजे जा सकते हैं।

★ सभा की देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियां यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवा दें।

★ यदि आपकी आर्यसमाज के अन्तर्गत शिक्षण संस्थान/विद्यालय चल रहा है तो उसे पुनः खोलने के सम्बन्ध में 15 अक्तूबर के बाद जारी होने वाली दिल्ली सरकार के दिशा-निर्देशों का पूर्णतः पालन करें।

★ किसी भी कार्यक्रम में सामाजिक/शारीरिक दूरी न होने की दशा में सरकार द्वारा धारा 144 लगाई जा सकती है और सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन न होने की अवस्था में आपदा प्रबन्धन अधिनियम-2005 की धाराओं 51 से 60 और भारतीय दण्ड सहिंता की धारा 188 के अन्तर्गत कार्यवाही की जा सकती है।

★ अतः सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों का पालन अवश्य करें।

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)
प्रधान, मो. : 9810061763

सामाजिक कार्यकर्ता कैसे बनें?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....बिना विचारे कार्य में लग जाने वाला, साधारण विचार वाला घमण्डी, दुष्ट, बदला लेने के स्वभाव वाला, आलसी, उत्साहहीन और दीर्घ सूत्री कार्यकर्त्ता तामस कार्यकर्त्ता कहलाता है। इनकी दो श्रेणियाँ हैं- 1. सेवाभाव से प्रेरित, उदारवृत्ति, निष्काम सेवी, मानवीय गुणों वाला। इसे हम सात्विक कार्यकर्त्ता कह सकते हैं। जैसे प्राकृतिक आपदा, औषध वितरण, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम आदि में सहयोग देना सात्विक भावना का प्रतीक है। 2. दूसरे प्रकार के वे कार्यकर्त्ता हैं जो समाज में अन्याय, अभाव, शोषण, दासता, भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और उचित-अनुचित सभी साधनों का प्रयोग करने का समर्थन करते हैं तथा अपना जय-जयकार, प्रशंसा आदि सुनना चाहते हैं उन्हें राजसिक वृत्ति वाला कार्यकर्त्ता समझना चाहिये। .....

स भ्य मनुष्यों के संगठन को समाज कहते हैं। जो समाज के लिये हितकर एवं उपयोगी कार्य हैं उन्हें करने वाला सामाजिक कार्यकर्त्ता कहलाता है। गीता में इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा गया है।

सात्विक कार्यकर्त्ता

मुक्तसंगोऽनहं वादी धृत्युत्साह समन्वितः।

आसक्ति रहित अर्थात् मैंने यह किया, मैंने वह किया, इस प्रकार के अहंवाद से शून्य, धैर्य तथा उत्साह से युक्त, सिद्धि तथा असिद्धि दोनों अवस्थाओं में निर्विकार कार्यकर्त्ता सात्विक कार्यकर्त्ता कहलाता है।

राजसिक कार्यकर्त्ता

रागी कर्मफल प्रेप्सुर्लुब्धो
हिंसात्मकोऽशुचिः। हर्ष शोकाचितः
कर्त्ता राजसः परिकीर्तितः।।27।।

भिन्न-भिन्न पदार्थों में राग रखने वाला, कर्म करके उसके बदले में फल की इच्छा रखने वाला, लोभी, अभिलाषित पदार्थ की प्राप्ति के लिये हिंसा भी करने को तैयार, अपवित्र आचार-विचार फल प्राप्ति में हर्ष तथा फल न मिलने पर शोक मनाने वाला कार्यकर्त्ता रजो गुणी कार्यकर्त्ता कहलाता है।

तामसिक कार्यकर्त्ता

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शवो
नैष्ठकृतिकोऽलयः। विषादी दीर्घ सूत्री
च कर्त्ता तामस उच्यते। गीताः 18/28

बिना विचारे कार्य में लग जाने वाला, साधारण विचार वाला घमण्डी, दुष्ट, बदला लेने के स्वभाव वाला, आलसी, उत्साहहीन और दीर्घ सूत्री कार्यकर्त्ता तामस कार्यकर्त्ता कहलाता है। इनकी दो श्रेणियाँ हैं-

1. सेवाभाव से प्रेरित, उदारवृत्ति, निष्काम सेवी, मानवीय गुणों वाला। इसे हम सात्विक कार्यकर्त्ता कह सकते हैं। जैसे प्राकृतिक आपदा, औषध वितरण, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम आदि में सहयोग देना सात्विक भावना का प्रतीक है।

2. दूसरे प्रकार के वे कार्यकर्त्ता हैं जो समाज में अन्याय, अभाव, शोषण, दासता, भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष करते हैं और उचित-अनुचित सभी साधनों का प्रयोग करने का समर्थन करते हैं तथा अपना जय-जयकार, प्रशंसा आदि सुनना चाहते हैं उन्हें राजसिक वृत्ति वाला कार्यकर्त्ता समझना चाहिये। तामसिक वृत्ति वाला कार्यकर्त्ता संगठन को अपयश दिलाने वाला ही होता है।

कार्यकर्त्ता की योग्यता

1. जो समाज में परिवर्तन चाहते हैं तथा उसके लिये अपना जीवन समर्पित कर सकें उन्हें ही आगे बढ़ना चाहिये।

2. कार्यकर्त्ता किसी भी संगठन का आधार होते हैं। उनकी कार्य पद्धति, व्यवहार, ईमानदारी, निष्ठा एवं लगन को देखकर ही लोग उस संगठन से जुड़ते हैं। इसलिये उन्हें लंगोट का पक्का और हाथ का सच्चा होना आवश्यक है।

3. जो महत्त्वकांक्षा अर्थात् अपने को ही सर्वोपरि दिखाने वाला न हो। जो संगठन के नेतृत्व और नीतियों में विश्वास रखता हो तथा सामने प्रशंसा और पीछे से निन्दा करने वाला न हो।

4. जो अनुशासन प्रिय हो। संगठन के आदेश को ननुनच किये बिना मानता हो। अधिक बोलने वाला या कुछ भी न बोलने वाला कार्यकर्त्ता संगठन के लिये उपयोगी नहीं होता। उसे स्पष्टवक्ता, मितभाषी और गम्भीर होना चाहिये।

5. सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि किसी भी कार्यकर्त्ता में उत्साह, जोश और उमंग होनी चाहिये। जो संगठन के लिये मर मिटने को तैयार हो वही सच्चा कार्यकर्त्ता माना जाता है। अन्य लोग दिखावा मात्र हैं।

- शेष अगले अंक में

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

Continue From Last issue

.....The college went on growing in numbers as well as in influence. After sometime similar institutions were started at Jalandhar and Hoshiarpur. Then schools sprang up at various places in the Punjab. It is no wonder that today there are about three hundred schools and colleges in the province. These have as many as seventy thousand students on their rolls. On them the Arya Samajees spend more than Rs. Twenty lacs every year. Besides these there are an Ayruvedic College, a College of Divinity and an Industrial School. All these are, in away, the children of the D.A.V. College, Lahore. .....

After working at the college for more than twenty five years L. Hans Raj retired. This was in 1911. He was, of course, presented with many addresses of congratulation. A big hall was also constructed in his memory and was named the Hans Raj Hall. Many people were sorry that he was leaving the institution he had bui It up, but he felt happy because he was leaving the college in the hands of one of his most able pupils.

The question may here be asked: What did L. Hans Raj do for the college? In the first place, he popularized Hindi and Sanskrit. Before the college was established not more than fifty students in the Punjab sat for examinations in Hindi or Sanskrit. It was mainly on account of his efforts that many more students began to study these languages. The result of this study was that Hindu young men became familiar with their own literature, culture and civilization.

Thus they began to take an interest in the past of their country.

They became fam il iar with heroes and heroines of their nation, and learnt the value of their ancient ideals.

This came about not only as a result of the teaching of these languages. It was done more by the example ofL. Hans Raj. They saw in him those virtues which the ancient sages possessed. His was a life of simplicity and he was free from pride of any kind. In this connection a very interesting story is told.

A gentleman from Rawal pindi, who was not an Arya Samajist, sent his son to the D.A.V. High School, Lahore. After he had passed the Entrance examination, the son insisted onjoiningthe D.A.V. College. The father wanted to send him to some other college. So he asked his son to change his mind. But the son would not. At last the father came to Lahore with his son in order to put him in the D.A. V. College.

But before he left Lahore he felt he would like to meet the principal. However, he hesitated to do so. He thought that the principal would be a lordly person living in a grand bungalow and waited upon by many servants. Great was his surprise when he was taken to an ordinary-looking house. There he found a gentleman dressed in very ordinary clothes sitting on a wooden cot. This gentleman spoke to him very kindly and after sometime he discovered that he was talking to the principal of the college. He was so struck with the simplicity ofthe gentleman that he became a mem ber of the Arya Samaj.

This simplicity is a feature of the Life-Members of the D.A.V. College. The Order was started by L. Hans Raj in 1902. Distinguished graduates of Indian Universities, provided they are Arya Samajists, canjoin. They have to serve the college for twenty years for a small monthly allowance. Their chiefwork is to teach in the college or school with a view to furthering the mission of the Arya Samaj.

This Order had about sixteen members. Most of these were managing the different departments of the college. L. Sain Das, who was at one time the Principal ofthe college, was also one of its members. So also was L.

Diwan Chand, M.A. former, Principal ofthe D.A.V. College, Kanpur, and Vice-Chancellor of Agra University.

One thing which was a part of L. Hans Raj's life was his love of economy. It was natural, therefore, that the college should also be run with the strictest possible economy. Sir John Maynard, late Vice-Chancellor ofthe Punjab University, once said, "The management of the college knows how to make a rupee go towards doing the work of rupees two or even more." This is perfectly true. It is on account of this that the college was able to do so much. This naturally meant a great deal of work for the principal and the office-bearers. But they did willingly and gladly.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

स्वास्थ्य रक्षा

होम्योपैथी चिकित्सा-विज्ञान

गतांक से आगे -

होमियोपैथिक दवा का शक्तिकरण (Potentialisation)

सभी पैथियों में औषधियां मूलत: सब वही होती हैं, भेद केवल इनके निर्माण एवं प्रयोग में होता है।

होमियोपैथिक दवा बनाने की विधि बड़ी ही विचित्र है। इस विधि में औषधि के स्थूल रूप को इतने सूक्ष्मतम रूप में पविर्तित कर दिया जाता है कि दवा की तीसरी शक्तिकृत दवा में दवा का स्थूल अंश तो क्या, दवा के सूक्ष्म अंश का भी पता नहीं चलता।

होमियोपैथी की किसी भी शक्तिकृत दवा में 6 शक्ति के बाद दवा की आन्तरिक अदृश्य शक्ति जाग्रत हो जाती है और इस तरह दवा की आन्तरिक जीवनी शक्ति रोगी को ठीक करती है।

होमियोपैथी की शक्तिकृत दवा 6 शक्ति के बाद 30, 200, 10,000, 50,000 तथा 1 लाख पावर (पोटेन्सी)-वाली होती है। इन उच्चतर शक्तिकृत दवाओं में दवा का नामोनिशान ही नहीं रहता, जबकि ये सूक्ष्मतम अदृश्य शक्ति रूपा होमियोपैथिक दवाइयां पुराने, जटिल तथा असाध्य कहे जाने वाले रोगों को जड़मूल से स्थाई रूप से नष्ट कर देने का सामर्थ्य रखती हैं तथा उस रोगजन्य अन्तरंग को Regenerate करने की क्षमता भी रखती हैं।

होमियोपैथिक दवाओं का परीक्षण (Proving of Drugs)

कौन-सी औषधि स्वस्थ व्यक्ति में क्या लक्षण पैदा करती है, डॉ. हैनीमैन ने ही इसका आविष्कार किया।

होमियोपैथी की अधिकांश दवा का डॉ. हैनीमैन ने स्वयं तथा अपने कई स्वस्थ सहयोगियों पर परीक्षण किया-उनमें जो-जो शारीरिक तथा मानसिक लक्षण उत्पन्न हुए, उनका सम्पूर्ण रेकार्ड किया गया। इस प्रकार परीक्षित होमियोपैथिक शक्तिकृत दवाओं का जो सीजव चित्रण संकलित किया गया, उस ग्रन्थ का नाम **"होमियो पैथिक मैटेरिया-मेडिका"** रखा गया। चूंकि होमियोपैथिक दवाओं के परीक्षण का आधार स्वस्थ मानव-शरीर रहा है। अत: जब तक मानव पृथ्वी पर है होमियोपैथी की वे ही दवाइयां सदियों तक चलती रहेंगी।

ऐलोपैथी दवा बार-बार इसलिए नई-नई बदलती रहती हैं कि उसके परीक्षण का आधार चूहे, बंदर, गिनीपीज-जैसे जानवर तथा रोगी होते हैं।

होमियोपैथी दवा के चयन का सिद्धान्त

सिद्धान्तरूप से होमियोपैथ का काम ऐसी औषधि का निर्वाचन करना है, जिसके लक्षण हू-बहू रोगी के लक्षणों से मिलते हों। जब रोगी के लक्षणों और औषधि के लक्षणों में अधिक साम्यता, समानता, एकरूपता पाई जाती है तो वही औषधि रोग को दूर करेगी।

औषधि और रोगी का वैयक्तिकरण (Individualisation) करना होमियापैथी का सिद्धान्त है। इसी सिद्धान्त के आधार पर होमियोपैथ रोगी द्वारा बताए गए सम्पूर्ण लक्षणों को ध्यान में रखकर ही उपयुक्त औषधि एवं दवा की पोटेन्सी (पावर) का चयन करता है। यह चयन-प्रक्रिया होमियोपैथ के अध्ययन और अनुभव पर आधारित रहती है।

इस्लामिक जिहाद : समस्या, कारण एवं समाधान - वेबीनार सम्पन्न

राष्ट्र निर्माण पार्टी द्वारा इस्लामिक जिहाद की समस्या : कारण एवं समाधान विषय पर वेबीनार का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से सुरेश चव्हाण, प्रधान सम्पादक सुदर्शन न्यूज तथा श्री राकेश मुदगल एडवोकेट ने विचार रखे। कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ठाकुर विक्रम सिंह जी ने देश इस्लामिक जिहाद नाम पर राष्ट्र विरोधी तत्वों के मजबूत होने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए देशभक्त युवकों को उनका मजबूती से सामना करने लिए आह्वान किया।

श्री सुरेश चव्हाण ने प्रश्न उठाते हुए कहा कि देश संविधान के लिए है या संविधान देश के लिए है। वर्तमान संविधान को देश की वर्तमान चुनौतियों का समाना करने के लिए नाकाफी बताते हुए उसमें आमूलचूल परिवर्तन करने पर बल दिया। जिससे कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्य, दर्शन एवं धर्म को सुरक्षित किया जा सका। राकेश कुमार एडवोकेट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुस्लिम समाज परिवर्तन से डरता है। इस्लामिक जिहाद जैसे विषयों पर बातचीत करने से परहेज करता है तथा धमकी या हिंसा का सहारा लेकर जवाब देने की कोशिश करता है, जिससे पूरे विश्व में इस्लामिक जिहाद के कारण समस्या बनी हुई है। कार्यक्रम का समापन करते हुए राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. आनंद कुमार ने सभी वक्ताओं का धन्यवाद किया तथा अवगत कराया कि इस्लामिक जिहाद के बारे में महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में सर्वप्रथम समालोचना की है- ***दानवीर विद्यालंकार, संगठन मंत्री***

22वां वार्षिकोत्सव

ओम योग संस्थान ट्रस्ट, पाली, जिला फरीदाबाद (हरियाणा) का 22वां वार्षिकोत्सव स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के मार्गदर्शन में 18 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2020 तक आयोजित होगा। इस अवसर पर सवा लाख गायत्री महायज्ञ, सामवेद पाराण यज्ञ, 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, ध्यान एवं योग साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम प्रतिदिन सायं 3 से 6 बजे तक आयोजित किया जाएगा। - ***सत्यवीर आर्य, मन्त्री***

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज वेद मन्दिर, सी.पी. ब्लाक मौर्य एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-34 को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो आर्यसमाज के सिद्धान्तों में पूर्ण श्रद्धा रखता हो तथा यज्ञादि समस्त संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराने की योग्यता रखता हो। आर्यसमाज में नि:शुल्क आवास के साथ योग्यतानुसार वेतन प्रदान किया जाएगा। इच्छुक महानुभाव अपना विस्तृत बायोडाटा प्रकाशन तिथि से 15 दिनों के अन्दर 'प्रधान जी' के नाम भेजें।

- सोहनलाल आर्य, मन्त्री (9810716655)

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट/टेलिग्राम द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

शोक समाचार

स्वामी शतानन्द जी का निधन

गुरुकुल यमुनातट मंझावली (फरीदाबाद) के भूमि प्रदाता, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य शिष्य, युवाओं के प्रेरक स्वामी शतानन्द जी का दिनांक 2 अक्तूबर, 2020 को 101 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 3 अक्तूबर को प्रात: 9 बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

पं. धूमसिंह शास्त्री जी को पुत्रशोक

दिव्य गौशाला गढ़ मिरकपुर (सोनीपत) के अध्यक्ष पं. धूमसिंह शास्त्री जी के मझले सुपुत्र श्री पुनीत जी का दिनांक 2 अक्तूबर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 7 अक्तूबर, 2020 को दिव्य गौशाला में सम्पन्न हुई।

श्री वेद रत्न आर्य जी का निधन

आर्यसमाज मालवीय नगर, नई दिल्ली के पूर्व मन्त्री एवं कर्मठ वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री वेदरत्न आर्य जी का 6 अक्तूबर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 अक्तूबर, 2020 से रविवार 11 अक्तूबर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 08-09 अक्तूबर, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 अक्तूबर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल
www.AryaSandeshTV.com

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 योग एवं स्वास्थ्य
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन बेला
प्रात: 9:00 श्री राम कथा
प्रात: 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 योग एवं स्वास्थ्य
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 भजन बेला
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात:4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं।

- व्यवस्थापक

प्रतिष्ठा में,

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12 नए परिवारों में यज्ञ कराएं

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सतीश चड्डा जी

महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मो. 954004141, 9313013123

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह